

कुछ भी

मुकेश राणा मिसु

ओम प्रकाशन, नोएडा

ISBN : 978-93-82374-45-9

मूल्य : ₹ दो सौ (₹ 200)

प्रकाशक : ओम प्रकाशन
प्रतीक एडिफिस, सेक्टर 107
नोएडा-201304
9312242122

संस्करण : 2025

सर्वाधिकार : सुरक्षित

समर्पण

इस पुस्तक, 'कुछ भी', को समर्पित करता हूँ उस अदृश्य प्रेम को, उस काल्पनिक साथी को, जिसकी मौजूदगी ने मेरे शब्दों को जिंदा किया। उस सपनों भरे आँगन को, जहाँ हमारी मुलाकात हुई, उस चुपचाप बातचीत को, जो शब्दों से परे थी और उस अनकहे वादे को, जो हमेशा मेरे दिल में गूँजता रहेगा।

यह पुस्तक उस अटूट उम्मीद की कहानी है, जो हरपल मेरे साथ रही, उस विश्वास की, जो कभी कमजोर नहीं हुआ, और उस प्यार की, जो असलियत से दूर, कल्पना की दुनिया में खिलता रहा। यह एक यात्रा है, मेरे भीतर के उस कोने की, जहाँ कल्पना और हकीकत मिलकर एक अद्भुत दुनिया बनाते हैं। यह उन सपनों का संग्रह है, जो कभी जाग नहीं सके, लेकिन मेरे दिल में हमेशा जिंदा रहेंगे।

यह समर्पण उस अनजान प्रेमी के लिए है, जिसने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसने मेरे शब्दों को आकार दिया, और जिसने मुझे दिखाया कि प्यार केवल छूने और देखने से परे भी कितना गहरा और महत्वपूर्ण हो सकता है।

आभार

इस पुस्तक 'कुछ भी' को साकार करने में जिन लोगों ने मुझे प्रेरित किया, उनके प्रति मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

सबसे पहले, मैं शिक्षिका श्रीमती नूतन कुमार जी का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे मेरी पहली कविता 'पैरों के निशान' लिखने के लिए प्रेरित किया। आपके मार्गदर्शन ने मुझे शब्दों की ताकत से परिचित कराया और मेरी रचनात्मकता को नयी दिशा दी।

मेरे पिता जी, श्री दलबीर सिंह जी और माता जी, श्रीमती मलका देवी जी, का आभार व्यक्त करना भी मेरे लिए एक विशेष अवसर है। आपके समर्थन और प्रेम ने मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

मेरे बड़े भाई, गौरव राणा जी, का भी धन्यवाद, जिन्होंने हमेशा मेरा हौंसला बढ़ाया और मेरी रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

धर्मपुर पब्लिक स्कूल, धर्मपुर, में मेरी मैट्रिकुलेशन की यात्रा ने मुझे लेखन की दिशा में सोचने का अवसर प्रदान किया। वहीं मैंने यह ठान लिया कि एक दिन मैं भी लिखूँगा।

आर्मी पब्लिक स्कूल, डगशाई, में मैंने हिंदी साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने लेखन की यात्रा की शुरुआत की।

मेरे दोस्तों का भी आभार, जिन्होंने मेरी कविताएँ सुनीं और मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया। आपके साथ बिताए क्षणों ने मेरे लेखन को और भी समृद्ध किया।

उस कल्पनाशील लड़की का धन्यवाद, जिसने मुझे अपनी भावनाओं को शब्दों में ढालने के लिए प्रेरित किया।

यद्यपि कोई छूट गया हो, तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ और उम्मीद करता हूँ आप मुझे छोटा समझ कर माफ कर देंगे।

आप सभी के बिना यह पुस्तक संभव नहीं होती। आपकी प्रेरणा और समर्थन मेरे लिए अनमोल हैं।

भूमिका

कविता एक ऐसा माध्यम है, जिसमें हम अपनी गहरी भावनाओं और विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। मेरी यह पुस्तक 'कुछ भी' एक यात्रा है, जो एकतरफा काल्पनिक प्रेम की दुनिया में ले जाती है। इस पुस्तक को पढ़नेवाले हर व्यक्ति के लिए इसका अर्थ भिन्न हो सकता है, और यही इसकी खूबसूरती है।

वास्तव में, मेरे लिए लोगों के विचार इतने महत्वपूर्ण नहीं, लेकिन जब कोई इस किताब को पढ़ता है, तो यह अनुभव दो तरह से हो सकता है।

पहला, कुछ लोग इसे देखकर कह सकते हैं, 'कुछ भी लिख दिया है।' ऐसे पाठक शायद इसे एक साधारण, बेकार या बिना किसी गहराई की कविता मान सकते हैं। वे इस पुस्तक के भावनात्मक तत्वों को नहीं समझ पाएँगे या इसके पीछे की सोच को नजरअंदाज कर देंगे।

दूसरा, कुछ पाठक इसे एक गहनता से भरा अनुभव मान सकते हैं। वे इस पुस्तक में एकतरफा प्रेम की जटिलताओं को देखेंगे, उन भावनाओं को महसूस करेंगे जो कभी कह नहीं पाए। यह पाठक उन शब्दों में अपने ही अनुभवों की छया पाएँगे और महसूस करेंगे कि इस किताब में लिखा

हरएक शब्द एक स्थिति या भावना का प्रतिबिंब है।

इस प्रकार, 'कुछ भी' केवल एक पुस्तक नहीं है; यह एक ऐसा माध्यम है, जो पाठक को उनके अपने अनुभवों और भावनाओं के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। चाहे कोई इसे नकारे या स्वीकारे, यह पुस्तक एक संवाद का आरंभ करती है, जहाँ प्रेम, भावनाएँ और स्थिति का गहरा अर्थ छिपा है।

आशा है कि यह पुस्तक उन सभी को छू लेगी, जो प्रेम की जटिलताओं को महसूस करते हैं और उन भावनाओं को समझते हैं, जो अक्सर अनकही रह जाती हैं।

अनुक्रम

आगे बढ़ते गए	13
एक लड़की	15
पाठशाला	16
एक पल	18
ना तेरे बिन	19
पैरों के निशान	21
Mam Said No	23
तुमको सोचा	25
आज का दिन	27
दूर हूँ	29
लिखूँगा तो सही	31
काश मैं	33
जुल्मे प्यार	36
हाल हाले दिल का	39
तुम्हारे बारे	41
दिल टूट न जाए	43
मुसाफिर बन जाना	45
प्याला पी ना सका	47

- 49 कोई गिला है क्या
50 मनाना आता है
52 झूठ-मूठ का ही सही
54 खुशी का तोहफा
56 दो चेहरे चार आँखें
58 मैं आँसू रोक न सका
60 इंतजार

एकतरफा

आगे बढ़ते गए

बचपन में माँ-बाप ने चलना सिखाया ।।।,
उँगली पकड़ के भविष्य का रास्ता दिखाया ।।।,
आगे आनेवाले पथरों पर भी हम चढ़ते गए,
पीछे मुड़कर नहीं देखा आगे बढ़ते गए ।

कठिनाइयाँ तो बहुत झेली हमने,
रास्ता दिखाया हमें हमारे अपनों ने,
जहाँ भी गए वहाँ विजय गढ़ते गए,
पीछे मुड़कर नहीं देखा आगे बढ़ते गए ।

रास्तों पर दिखे कुछ सुंदर मोड़,
सामान के साथ-साथ चैन चुरा ले गए चोर,
पर हम तो ऐसे ही चलते गए,
पीछे मुड़कर नहीं देखा आगे बढ़ते गए ।

रास्ते में आए कुछ सुनहरे मोड़,

हमने टूटे फूलों को भी दिया जोड़,
अपनी कला से हम कठिनाइयों से लड़ते गए,
पीछे मुड़कर नहीं देखा आगे बढ़ते गए।

जिंदगी अब गई थी जैसे थम,
अब ना हमम् तुम ना तुमम् हम,
अब हम दूसरों की राहों से हटते गए,
पीछे मुड़कर नहीं देखा आगे बढ़ते गए।

एक लड़की

कल देखा मैंने एक सुंदर सपना,
जिसमें दिखा कोई अपना,
हवा थी और बिजली कड़की,
फिर दिखी एक सुंदर लड़की।

क्या कहना उसका काम उसके कमाल,
कला है बातों से खड़ा कर दे बवाल,
नाराज है मुझसे मुझ पर वो भड़की,
पर बार-बार याद आ रही है वह लड़की।

हमने देखा मटके बनाते कुम्हार,
पर न सहा गया उसके साथ दुर्व्यवहार,
सोच ही रहा थाम
सोच ही रहा था मैं तभी कुंडी खड़की,
सपना टूटा तो तो मिलने आई मुझसे वो लड़की।

पाठशाला

बचपन में बस्ता उठाया कंधों में,
पूरा दिन बीत गया फूलों की सुगंधों में,
कहाँ गया था पूछता है रास्ते में लाला,
मैंने बोला गया था मैं पाठशाला।

जहाँ जाकर करता था मैं मज़ा,
बचपन में लगती थी जो सजा,
पता नहीं क्यों रोज़ पूछता था लाला,
मैं बोलता था गया था पाठशाला।

पढ़कर नहीं जाता था मैं वहाँ,
मास्टर की छड़ी के साथ इंतजार करते मेरा जहाँ,
दौड़ते दौड़ते मेरे पैरों में पड़ गया छाला,
पर मैं पहुँच गया पाठशाला।

दसवीं के बाद बड़ा किया विचार-विमर्श,

11वीं में मैंने लेली कॉमर्स,
पास था एक बहता नाला,
मैंने जाना नहीं छोड़ा पाठशाला।

आखिरकार,
अँधेरी थी रात, नींद नहीं आई,
जैसे दूध में ना आए मलाई,
फिर भी था सम्राँ काला,
12वीं के बाद मैंने छोड़ दी पाठशाला।

एक पल

पहली दफ़ा मैंने तुझे देखा तो,
लगा जैसे कोई कोमल फूल की कली हो,
ठान लिया ना उसके बिना पीयूँ जल,
रुककर मैं देख लूँ उसको एक पल।

लग गया उसमें मेरा दिल,
साल बराबर महीने में आ गया फोन का बिल,
अब ना पानी ना नल,
बस देख लूँ मैं उसको एक पल।

डर के मारे मैं गया हिल,
याद करके उसको मैं गया खिल,
आज ना भिजवाऊँ संदेश न कल,
देख लूँ मैं उसको एक पल।

सोचते सोचते उसके बारे हो गई रात,
दोस्तों को रोज़ सुनाऊँ उसकी बात,
अब क्या बाली क्या उसका बल,
सपनों में भी देख लूँ मैं उसको एक पल।

ना तेरे बिन

क्या सोचूँ मैं उसको क्या उसकी बात,
करते-करते बात पता नहीं कब हो गई रात,
अब ना कोई रात ना कोई दिन,
अब ना कोई पल तेरे बिन।

जो तू बोले वो तुझे ले दूँ,
कहे तो जाँ भी दे दूँ,
बन जाऊँ तेरे लिए जिन,
पर ना जियूँ तेरे बिन।

लोग मुझे बोले ये है गंदी,
बना लेगी तुझे बंधी,
पर मैं ना थकूँ तारीफ उसकी गिन गिन,
अब ना जियूँ तेरे बिन।

मजा ना रहा जो दिन में था,

तेरी यादों में डूबा रहता था,
मैंने ली सब पुस्तकें गिन,
ना जियूँ अब तेरे बन।

गया ॥ म् सुबह-सुबह घूमने,
दोस्तों ने बोला गया ॥ ना उससे मिलने,
मैंने उसको बोला May I come in your life,
Can you be my wife?
अब क्या out क्या in,
ना जीना अब तेरे बिन।

पैरों के निशान

अलबेला जिंदगी का सफर,
जिंदगी मू हो जैसे मस्ती का ऑफर,
हम हुए बहुत परेशान,
पर न दिखे उसके पैरों के निशान।

हम आगे बढ़ते गए,
जीवन मू जो दिखा उसे पढ़ते गए,
बहुत परखे जिंदगी मू इंसान,
पर न दिखे उसके पैरों के निशान।

दोस्तों के साथ हो गॉसिप,
या सुबह जाना हो ऑफिस,
बातों से मेरी खड़ा हुआ घमासान,
पर न दिखे उसके पैरों के निशान।

हम सुनाई दी ममूर आवाज़,

दुनिया हुई हमसे नाराज़,
उसने दिखाई अपनी शान,
पर न दिखे उसके पैरों के निशान।

बहुत मनाया उसको वो रही गुम सुम,
जैसे हो कोई कुसुम,
ढूँढते ढूँढते पहुँच गए शमशान,
पर न दिखे उसके पैरों के निशान।

Mam Said No

Once a day I came,
Till now I same,
I ask can I go?
Mam said No.

I give all respect,
Teacher say to all suspect,
I ask can I throw?
Mam said No.

I said I good,
This is my childhood,
I say I think so,
Mam said No.

Someone says think a while,

I say why not I can smile,
I ask can I play in snow?
Mam said No.

But I think man is not bad,
Because of me why she sad,
I ask can I go?
Mam said No.

तुमको सोचा

हमने तुमको यादों में सोचा,
रात भर फिर दिल को खरोंचा,
भूलना चाहा तुम्हें तो,
देखा जैसे तुम मेरी दुनिया हो।

जब तुम्हें देखा तो,
लगा तुम खास हो,
जब तुमसे बात करनी चाही,
रोकने वाले थे बहुत राही।

पीछा किया तुम्हारा बहुत हमने,
पर ना देखा तुमने,
बस तुम्हें देखते ही रह गए,
सारे गम हम खुद सह गए।

सोचता हूँ अगर कर लेते हम बात,

तो कर लेता में भी तुमसे मुलाकात,
पर मुझे अब भी चाहिए तुम्हारा साथ,
थाम लो अब तुम मेरा हाथ।

जब लिखकर छापी किताब,
तो मिले बहुत खिताब,
अब ना किसी को कुछ कहूँगा,
ना कोई दर्द या दुर्व्यवहार सहूँगा।

आज का दिन

याद रहेगा आज का दिन,
जो बिताना पड़ा था तेरे बिन,
पेपर था आज उसका,
नाम ना बता सका मैं जिसका।

कैसे कटा आज का दिन तनहाई में,
जैसे बिना घी का हलवा बन रहा हो कढ़ाई में,
याद आ गया अलादीन का जिन,
ना भूल पाऊँगा आज का दिन।

मैंने देखा बैठी थी वो अकेली,
न थी साथ उसके कोई सहेली,
सुलझा न पाया मैं ये पहेली हेली,
जीवन बना रह गया विहीन,
याद रहेगा आज का दिन।

आज था जाने मुझे खाने-खाना,
याद आ गया उसका आना-जाना,
छोड़ दिया जिसके लिए याराना,
चुभा गई बेख्याली का पिन,
ना भूल पाऊँगा आज का दिन।

बात न कर पाया मैं कायर,
पर याद में उसकी बन गया शायर,
गुस्सा जैसे बंदूक का फायर,
बताऊँ सबको उसकी बातें,
दे गई बस तन्हाई और यादें।

दूर हूँ

शुकर है खुदा का,
जो प्यार सच्चा कर पाया,
लेकिन गम भी है,
के ना हमारा रिश्ता अच्छा कर पाया।

जब भी माँगा तुम्हें उससे,
कभी भी नहीं की शर्म,
लेकिन कुछ ही समय में,
उसने तोड़ दिया मेरा ये भ्रम।

मैं था पागल कभी जिसके लिए,
मुझे उसी ने छोड़ा है,
सोचता था कभी के ये दिल है पत्थर का,
यह भ्रम भी उसी ने तोड़ा है।

टूटा ऐसे मेरा दिल,

हर जगह बिखर गया,
मैंने जो सीखा वक्त से,
अरे,
मैं तो निखर गया।

भूलना तुझे इतना आसान तो नहीं था,
जल्दी भुला लूँ तुझे,
तो ये सभी के लिए सही था।

तू कहती है ना मिले अब,
हो गए हैं दो साल,
लेकिन मैं नहीं बताना चाहता तुझे मेरा हाल।

अब ना करूँ ये इश्क कभी किसी से,
मैं ये कह ना पाया,
दूर आ गया हूँ तुमसे,
ना समझना अकेला रह ना पाया।

लिखूँगा तौ सही

आज फिर कुछ करने का दिल करता है,
देखता हूँ खूब तुझे,
पर ना दिल भरता है।

पल-पल यादों में तेरी है ये मरता,
किसी ने सच ही कहा है,
मरता क्या ना करता।

फिर उठा चला किया अपना काम,
लेकिन क्या याद भी है तुझे मेरा नाम।

नहीं है याद तो क्या हुआ,
हम याद करवाएँगे,
कितने भी दूर हो चाहे तुमसे,
कभी ना तुम्हें भूल पाएँगे।

क्या चाहते हो तुम कि,
मैं सभ तोड़ दूँ,
तुम दूर हो तो क्या,
लिखना छोड़ दूँ।

तुम बदल गए हो लेकिन,
मैं तो हूँ वही,
चाहे कुछ भी हो जाए,
मैं लिखूँगा तो सही।

काश मैं

दूर हो तुम पास नहीं,
दिल में हो तुम,
तुम्हें एहसास नहीं,
खास हो तुम आस नहीं,
पानी हो तुम मगर प्यास नहीं।

कोई मुझे बताए कि,
मैं कैसे रोऊँ खुद को,
के रहा नहीं जा रहा है,
बहुत कोशिश की कहने की,
लेकिन कहा नहीं जा रहा है,
दिल में दबाए अरसा हो गया है,
अब सहा नहीं जा रहा है।

कैसे कहूँ कि मेरे दिल में उसके लिए प्यार है,
यह दिल करना चाहता इस बात का इजहार है।

काश मैं बता पाता के दिल में कितना गम है,
जब भी सोचूँ तेरे बारे तो हो जाती आँखें नम हैं,
अब तो चारों ओर छाया बस गम ही गम है,
साथ मेरे है परछाई और अकेले हम हैं।

मैं नहीं चाहता कि उसे यह बात पता चल जाए,
जो थोड़ी बहुत बात होती है वह भी बंद हो जाए।

आपको पसंद आए इसीलिए तो लिखता हूँ,
अब कहाँ दो-तीन साल में एक बार दिखता हूँ,
हाँ मैं शायर बनकर हर बाजार बिकता हूँ,
अकेले में जब भी होता हूँ तो खूब चीखता हूँ।

तू आज साथ नहीं तो गम है,
तेरी याद आती हैं लेकिन सिर्फ आँखें नम हैं,
जिंदगी में कहाँ दुख कम हैं,
और हम किसी और ही दुनिया में कहीं गुम हैं।

अब सोचता हूँ,
हाँ मेरे हाथ में था कि मैं तुम्हें बता ना पाया,
किसी और के साथ देखा जो तुम्हें,
तो कहाँ दिल को सुकून आया।

के,
अब सिर्फ सपने में ही आती हो,
सारे पुराने गिले शिकवे सपने में ही मिटाती हो,

मेरी सारी गलतियों की मुझे याद दिलवाती हो,
और गम के साए में छोड़कर चली जाती हो।

मैं तो सारा समय उसकी यादों के साथ बिता लूँगा,
जो कोई माँगे मुझसे कुछ मैं सबकुछ लुटा दूँगा,
उसे भुला पाना थोड़ा मुश्किल तो होगा,
पर मैं कोशिश जरूर करूँगा,
जो भी जख्म हैं दिल में वह खुद ही भरूँगा,
के ना किसी पे अब विश्वास करूँगा।

हाँ तुम जानते हो उसको,
वो तुम्हारे बहुत करीब है,
जिंदगी के हो कितने भी चाहे,
वह दिल के गरीब हैं।

ऐसी क्या टटोल रही हो मेरे दिल को,
के इसमें कोई है ही नहीं।

तुम चाहे कितनी बदल जाओ,
मैं तो हूँ सिर्फ वहीं,
तुम यादों से गई हो लेकिन दिल से नहीं।

जुल्मी प्यार

इश्क करना है तो सच्चा करो,
ऐसा करो के सबसे अच्छा करो।

प्यार जो किया तो इतना किया के,
ना तुम भूल पाओगे हमें,
जितना भी दूर जाओ,
ना कभी छोड़ पाओगे हमें।

हम तो इस कदर डूबे हैं तेरे इन ख्वाबों में,
के दुनिया अब याद कहाँ,
तुम जाओगे जहाँ,
रूह मेरी पहुँच जाएगी वहाँ।

इश्क का छाया इस कदर था खुमार हमें,
के ना पता चला कि है बुखार हमें,
इश्क का असली मतलब तो ऐतबार में है,

और जो इस बुखार को उतार सके,
वो दवा प्यार में है।

ना कोई मिला मुझे के दिल इंतजार में है,
जिंदगी का मजा तो एकतरफा प्यार में है।

खाने की भूख है प्रेम की है चाहत,
सच्चा प्यार जो मिले तो मिलेगी दिल को राहत।

पर फिर भी ना वो हासिल कर पाया,
जिसका था मैंने ख्वाब सजाया,
तुमने भी तो हमें खूब है रुलाया,
पर प्यार किया ही है ऐसा,
जो ना मैं है तुम्हें भुला पाया।

अब सोचता हूँ के ना किसी को दिल में जगह दूँगा,
जहाँ तू कभी रहती थी,
ना छोड़ूँगी साथ जिंदगी भर,
यह बड़े प्यार से कहती थी।

अब मैं तेरे इन वादों को तोड़ चला,
जिंदगी में आगे बढ़ गया,
तेरी यादें पीछे छोड़ चला।

अब कैसे मैं कहूँ,
जब मुझसे पूछे मेरा कोई यार,

के मैं दिल बैठा हार,
और फिर कर बैठा,
ये,
जुल्मे प्यार

झल झल दिल का

अगर तेरे चेहरे से प्यार ना करता मैं,
तो तेरी आँखों की बात क्या करता मैं।

हाँ मैं जानता हूँ कुछ सपने हैं जिंदगी में,
जो अधूरे ही रह जाएँगे,
ना तुम शुरुआत करोगे,
ना हम कुछ कह पाएँगे।

शायरी लिखता तुम्हारे लिए,
तुम्हें फर्क पड़ता नहीं,
कोशिश तो बहुत की,
लेकिन मैं मरता नहीं।

जो तुम्हारे बारे में कोई कहे,
मैं जर्ता नहीं,
कोई कुछ भी करले,
मैं डरता नहीं।

मैं जानना चाहता हूँ,
कोई गलती हुई है मुझसे,
तो मैं उसे मानना चाहता हूँ,
ऐसा क्या करूँ के तुम मिलो मुझे,
मैं ये जानना चाहता हूँ।

जो कुछ हासिल नहीं हो सकता,
उसकी आस छूटती कहाँ है,
हम ही हैं वो जो उसको सभी में ढूँढ़ते रहते हैं।

लेकिन अब फर्क नहीं पड़ता,
हमें उनके विचारों से,
जो अब हमने सोच लिया,
अपना काम बनता,
भाड़ में जाए जनता।

के कभी लिखा करते थे तुम पे,
आज सिर्फ़ याद आती है,
आती है याद तो,
आँखें यूँ ही नम हो जाती हैं।

दूर गई जो मुझसे वो,
उसको सोचा तो रो गया,
लगा जैसे के कोई अपना-सा खो गया,
और मैं,
नम आँखों के साथ ही सो गया।

तुम्हारे बारे

क्या मैं वहम पालूँ के आपसे बात हो सकती है,
माना बुरा लगेगा बाद में,
मगर मन कहाँ मानता है,
के क्या पता बात हो ना हो,
ये भी दिल जानता है,
मगर विश्वास है आप पर,
के कभी वहम तो दूर तो करोगे ही आप।

ढूँढ़ने जो निकलूँ तुम्हें कभी,
ढूँढ़ने जो निकलूँ तुम्हें कभी,
कहीं रोशनी कम ना पड़ जाए,
मिलो ना तुम उन राहों पर,
जहाँ हम ठहर कर आए।

लेते ही तेरा नाम तेरी याद आ जाती है,
दिल में एक अनोखी सी खुशी छा जाती है,

मैं तो बहुत पहले से ही हूँ दीवाना तेरा,
क्या तुझे याद भी है नाम मेरा।

फर्क नहीं पड़ता ये सभी को कह देता हूँ,
लेकिन चुपचाप सारे गम सह लेता हूँ,
याद आए जो तेरी तो कुछ सोच लेता हूँ,
जो दिल करे रोने का तो थोड़ा-सा लिख लेता हूँ।

गुफ्तगू करूँ कैसे, बात होती कहाँ है,
मिलना चाहता हूँ तुमसे, मगर मुलाकात होती कहाँ है।

बात नहीं होती तुमसे, नाराज हो क्या,
तुम्हें देखकर खुश हो जाता हूँ,
अंधेरी रातों का चाँद हो क्या।

सूना-सूना लगता है ये गलियारा अब तुम्हारे बिना,
भीड़ तो बहुत है बस तुम नहीं हो।

तुम्हारी यादों में डूबे रहना,
तुम्हारे बारे सोचना,
और तुम्हारे बारे कहना,
ये आदतें नहीं है मेरी,
ये ख्वाइशें हैं।

दिल टूट न जाए

एक पल की खुशी जो मिली हमें,
लम्हा थम सा गया,
एक पल की खुशी जो मिली हमें,
लम्हा थम सा गया,
यूँ गुज़र गए ज़माने,
दिल थम सा गया,
कि अब वापिस कैसे आऊँ मैं,
उन गलियारों से,
जिनमें वो वक्त गुज़र सा गया।

मैंने ढूँढ़ा बहुत खुद को,
मैंने ढूँढ़ा बहुत खुद को,
मैं कहीं दिखूँ तो बताना,
तुम प्यार तो करते ही हो हमसे,
कभी जता कर भी तो दिखाना।

अगर मैं बोलूँ ज्यादा,
तो तुम बस चुप करा देना,
कहीं राज की बात भी,
ना यूँ ही निकल जाए।

मैं रोक नहीं पाऊँगा खुद को,
मैं रोक नहीं पाऊँगा खुद को,
तुम मुझे रोक तो देना,
कहीं दूर निकल गया,
तो दिखना मुश्किल ना हो जाए।

ना वजह पूछो मुझसे,
कहीं झूठ ना निकल जाए,
तुम देखो ना यूँ प्यार से,
कहीं जुबान ना फिसल जाए।

फिर मैं रोऊँ कैसे अपने शब्दों को,
कहीं तुम रूठ न जाओ,
तुम्हें कहीं देखूँ तो,
कहीं दिल टूट न जाए।

मुसाफिर बन जाना

सफर का मजा राहगीरों से क्यों पूछूँ,
के अब हम भी तो मुसाफिर बन गए हैं।

राहगीर हैं हम,
काफिर भी,
जिसकी आपको तलाश है,
वो मुसाफिर भी।

चलो चलें कहीं,
खुशी मिले जहाँ,
जीवन बसाए वहाँ,
तू मिल जाए जहाँ।

बस तुम हाँ करो एक बार,
बता देना होने लगे जो हमसे प्यार,
देरी न करना करने में इकरार,

कहीं अधूरी ही ना रह जाए ये बातें,
कहीं अधूरी ही ना रह जाएँ ये मुलाकातें,
बस तुम विश्वास रखना मुझ पे,
के ना झूठ कहूँगा कभी तुझसे,
बस तुम थोड़ा इंतजार जरूर करना मेरा,
आ जाऊँगा मैं,
दिखते ही नया सवेरा।

तुम उस लम्हे में मेरे पास आ जाना,
फिर तुम भी मुसाफिर बन जाना।

प्याला पी ना सका

प्याला मुँह के पास था,
मगर मैं पी ना सका,
तुम्हारे बिना जीने का सोचा,
मगर मैं जी ना सका,
कहा तुम्हें भी था हमने,
के सुना ही नहीं तुमने।

अपने दिल में दी तुमको जगह,
प्याला मुँह के पास था,
मगर मैं पी ना सका।

दिल में थी जो बात निकली नहीं जुबान से,
के छोड़ गई तुम जहाँ,
अब गुजरता नहीं मैं वहाँ से।

छाया था प्यार का रंग,

एकदम पक्का,
प्याला मुँह के पास था,
मगर मैं पी ना सका।

तुमने ही तो हमें,
रिश्तों के बारे में बताया है,
और तुम्हीं ने हमें घनी रातों में सताया है।

तुमसे बिछड़ा जो मैं,
के मैं ये दर्द और सह ना सका,
प्याला मुँह के पास था,
मगर मैं पी ना सका।

कोई गिला है क्या

अब नींद कहाँ है आँखों में मेरी,
जिन आँखों में कभी सपने थे।
जो तोड़ा तुमने एक सपना,
तो अब नींद कहाँ है आँखों में।

गिला क्यों ना करूँ मैं,
बिछड़ने का गम,
सहा नहीं जा रहा है,
जब कोई पूछे मुझसे,
तो कहा नहीं जा रहा है।

मैंने जो चाहा,
वो मुझे मिला है क्या,
छोड़ गई हो राहों पे,
पूछती हो कोई गिला है क्या।

मनाना आता है

तेरे जिस्म से प्यार क्या करता मैं,
दिल तो इन आँखों ने चुराया है,
तुमने चाहे ना खाई कसम,
लेकिन हमने सारे वादे निभाए हैं।

देखना तुम्हें और देखते रहना,
ना जाने क्यों ये आँखों की ख्वाहिश है,
तुम्हें देखकर खुश होना,
यही तो दिल की रिहाइश है।

दूर हूँ तुमसे मालूम है मुझे,
दूर हूँ तुमसे मालूम है मुझे,
खुद पर काबू करना तुम्हीं ने सिखाया है।

जो कभी बात करूँ तुमसे,
एक सुकून सा आ जाता है,

मगर तुम्हें याद करके,
दिल में कोहरा सा छा जाता है।

ना जाने क्यों डर लगता है मुझे,
कि तुम्हें मैं खो ना दूँ,
जो सोचूँ तुम्हारे बारे,
भरी महफिल में कहीं रो ना दूँ।

अब यादें तुम्हारी दिल में जो बसी हैं,
हालात देखकर हम पे गलियाँ जो हँसी हैं,
लेकिन मैं खुश हूँ,
के चलो तुमसे बात तो होती है,
याद आती है तुम्हारी तो,
आँखों में बरसात तो होती है।

रोक नहीं पाता मैं आँसुओं को अपने,
हमेशा ढूँढ़ता रहता हूँ तुम्हें अपने सपनों में,
ना पाना तुम्हें सपनों में,
दिल तो बहुत दुखता है,
दुख बहुत होता है,
मगर हमें दिल को मनाना आता है।

हाँ मुझे मनाना आता है,
हाँ मुझे समझाना आता है।

झूठ-मूठ का ही सही

जब मैं देखूँ तुम्हें,
तुम झूठ-मूठ का ही सही मुस्कुरा तो देना,
दिल में प्यार ना हो चाहे तुम्हारे,
झूठ-मूठ का ही सही दिखा तो देना।

जो आऊँ पीछे तुम्हारे,
झूठ-मूठ का ही सही,
भगा तो देना।

मुश्किल होगा मेरे लिए,
तुम्हें छोड़ पाना,
झूठ-मूठ का ही सही,
सुना तो देना।

ताकि मैं सोचूँ ना तुम्हारे बारे,
झूठ-मूठ का ही सही,

रुला तो देना।

पर याद तो जरूर करूंगा ही तुम्हें,
जो दिखूँ कहीं,
झूठ-मूठ का ही सही,
मुस्कुरा तो देना।

खुशी का तोहफा

अगर वो खुश हैं,
हमारे बिना,
तो क्यों ना उन्हें,
खुशी का ये तोहफा दिया जाए।

अगर याद आई उनकी हमें,
तो क्यों ना उन्हें याद किया जाए।

यही डर लगा रहता है,
के हम कुछ माँग ना लें,
इस डर से उन्हें मुक्त किया जाए,
क्यों ना उन्हें खुशी का तोहफा दिया जाए।

और जब हो कोई काम उन्हें,
तो क्यों ना हमें याद किया जाए,
हम तो फ्री ही हैं,

ये उन्हें बताया जाए,
क्यों ना उन्हें खुश होने का,
एक और मौका दिया जाए।

लेकिन क्या मैं,
यही चाहता था,
क्या फर्क पड़ता है,
सामने वाला तो कुछ और ही सोचता है,
उन्हें सोचने दिया जाए,
क्यों ना उन्हें खुश होने का एक तोहफा दिया जाए।

दो चैहरे चार आँखें

दो चेहरे चार आँखें,
क्या है किरदार इनका,
दिन न बीते ऐसा,
जो ना हो दीदार उनका।

कह ना पाए थे हम जो,
बयान करना चाहते थे,
वो राहें अब सूनी हैं,
जहाँ सिर्फ हम जाते थे।

क्यों गिला करें हम अब,
के बातें मन से निकलती कहाँ हैं,
वह राह ना मिली हमें,
हम जाना चाहते हैं जहाँ।

के तुम भी सही हम भी सही,

अपने-अपने विचारों में,
ढूँढ़ा बहुत तुम्हें,
पर ना मिली तुम गलियारों में।

दो चेहरे चार आँखें,
क्या है विचार इनका,
क्या कहें अब हम जो,
हो गया है दीदार उनका।

आँसू रोक न सका

तुमने कहा भूल जाओ मुझे,
मैं कुछ कह ना सका,
सोचा शायद होगी तुम खफ़ा,
पर जब देखे संदेश तुम्हारे,
मैं आँसू रोक न सका।

सोचा कभी के हम दोस्त थे,
तुमने कहा कोई दोस्त नहीं थे,
जब याद आई वो बातें,
मैं आँसू रोक न सका।

मैंने कहा एक बात कहनी है,
तुमने कहा समय नहीं है,
बीते समय की याद आई तो,
मैं आँसू रोक न सका।

तुमने कहा मैं नहीं मानती दोस्त तुम्हें,
मैंने कहा मैं तो मानता हूँ,
क्या ऐसा ही है सच में सोचा तो,
मैं आँसू रोक न सका।

क्यों बहा रहा हूँ मैं आँसू,
उसके लिए,
जो मेरा कभी कुछ था ही नहीं,
अपने मन को कठोर करना चाहा तो,
मैं आँसू रोक न सका।

मैंने सोचा के अब बात नहीं करूँगा,
जो याद आएगी फिर भी याद नहीं करूँगा,
लेकिन,
जब याद आई तुम्हारी,
जो सोचा था वो धरा का धरा रह गया,
मैं आँसुओं की गंगा बहने से रोक न सका।

इंतजार

कैसे बताएँ तुम्हें के इंतजार क्या है,
कैसे समझाएँ तुम्हें के इंतजार क्या है,
के तुमने कभी किया ही नहीं,
तुम्हें जरूरत भी नहीं,
कभी पूछो हमसे के इंतजार क्या है।

हाँ मैंने इंतजार किया सालों,
सदियाँ बीती इंतजार में,
सदियाँ बीती इज़हार में,
बीती सदियाँ तेरे प्यार में,
हाँ, मैंने किया इंतजार।

हाँ, मैंने किया इंतजार उस दिन का,
जब मैंने बताया तुम्हें,
के कितना प्यार है दिल में,
जानने पर करवाया तुमने जो मुझसे,

हाँ, वही इंतजार है।

और मुझे कोई शिकवा नहीं है,
के मैं इंतजार कर रहा हूँ,
इंतजार के बहाने मैं,
तेरी यादों में खोया हुआ हूँ,
जानने पर के मैं जिंदा हूँ,
करवाया तुमने जो मुझसे,
हाँ, वही इंतजार है।

हाँ, वही इंतजार है,
हाँ, वही इकरार है,
और हाँ, वही इज़हार है,
तुम्हें पाने के लिए,
हम बेकरार हैं।
हाँ, यही इंतजार है।

आज खड़े-खड़े मैंने
एक सपना देखा,
सपने में तुम्हें सजते देखा,
एक आह-सी भरी मैंने,
अरे ये मैंने क्या देखा।

